International Journal of Advanced Academic Studies 2019; 1(1): 170-171

E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
IJAAS 2019; 1(1): 170-171
Received: 21-05-2019
Accepted: 26-06-2019

संगीता कुमारी झा
शोधार्थी, विश्वविद्यालय,
हिन्दी–विभाग, ल.ना. मिथिला
विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार,
भारत

Corresponding Author:
संगीता कुमारी झा
शोधार्थी, विश्वविद्यालय,
हिन्दी–विभाग, ल.ना. मिथिला
विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार,
भारत

तुलसीदास रचित दोहावली में कलियुगी परिवेश का वर्णन

संगीता कुमारी झा

सारांश
तुलसीदास की रचनाओं में लोकमंगल का जो भाव विद्यमान है वह उनकी सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टि से उद्भूत है। जिस समाज में शास्त्रज्ञों, विद्वानों, अन्या–अत्याचार के दमन में तत्पर वीरों, कर्तव्यपालन करने वाले महापुरुषों, स्वामी की सेवा में मर–मिटने वाले सच्चे सेवकों प्रजा का पुत्रवत पालन करने वाले शासकों के प्रति श्रद्धा और प्रेम का भाव समाप्त हो जाएगा, उस समाज का कल्याण कैसे होगा? इन्हीं भावों को ध्यान में रखकर कलियुग के रूप में गोस्वामी ने अपने मानस, कवितावली, बरवै,दोहावली, 'गीतावली' आदि में राज्य और समाज का चित्रण किया है।
'दोहावली' में अपने समय की परिस्थितियों का वर्णन किया है, साथ ही कलियुगीन वातावरण पूर्व अनुमान को भी दर्षाया है। कलयुगी समय की धार्मिक, सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक परिस्थितियों का सुन्दर वर्णन दोहावली में किया गया है। दोहावली में कलयुग–वर्णन में जीवन–संघर्ष, धर्म दंभ युक्त, कपट व्यवहार क्षुद्र स्वार्थ की पूर्ति आदि ऐसे अनेको प्रवृति का संकेत दिया गया है।

प्रस्तावना
दोहावली तुलसी दास की अन्तिमकालीन रचनाओं में परिगणित होता है। कवि ने अपने जीवनानुभव को निचोड़ कर मानों यहाँ दोहो में पिरोकर हमारे सामने रखा है। हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल नीतिकाव्य का स्वर्णकाल था। हिन्दी के सम्पमूर्ण नीति–काव्य का एक विषिष्ट स्थान है और इस स्थान का प्रधान उनके द्वारा विरचित–दोहावली है। इससे अनुभूति की सरसता तथा अभिव्यक्ति की बंकिमता के दर्षन आद्यन्त होते हैं। यह ग्रंथ तुलसीदास के व्यापक जीवनानुभव से सम्पन्न एक प्रौढ़ कृति है जिसका क्षेत्र अत्यंत विषद् वेदमूल भारतीय संस्कृति की महत्ता की रक्षा, परम्परानुगत भक्तिभावना का प्रतिपादन, शुद्धाचार नीति, समाज–समीक्षा कलियुग–वर्णन जैसे अनेक महत्वपूर्ण तत्व–बिन्दुओं के प्रभावी स्पर्ष से युक्त कृति है।
'दोहावली' में कलियुग का वर्णन करते हुए तुलसी दासजी ने कहा है कि कलियुग में जप ही तप है। यदि ह्रदय में निर्गुण तत्व, नेत्रों में सगुण दर्षन एवं रसना में जप–रस की सिद्ध प्राप्त हो गई तो मानो मनोहर रत्न स्वर्ण–संपुटक में सुरक्षित–सुषोभित हो गया। तुलसीदास जी ने कलियुग–वर्ण के क्रम में कहा है कि–

"फोरहिं सिल लोढ़ा सदन लागे अढुक पहार।
कायर क्रर कुपूत कलि घर–घर सहस डहार।।

कलियुग में नर–नारी ब्रह्मज्ञान से शून्य होकर मोहवष क्षुद्र स्वार्थ की पूर्ति के लिए विप्र गुरुघाती होंगे। इस काल में सभी धर्म को विपरीत ही माना जाएगा और कोटि–कोटी कुमार्गो की कल्पना की जायेगी, पुण्य वन और पहाड़ की ओर भगवान अपनी जान बचावेंगे एवं सारे सद्‌गन्थ पुराने पड़ जायेगें। इसलिए तुलसीदासजी ने कहा है कि–

प्रकट चारीपद धरम के, कालि महँ एक प्रधान।
येन केन विधि दीन्हे ही दान करैकल्यान।।

तुलसी दासजी के जीवन पर 'कवितावली' का उत्तर काण्ड भले ही सबसे महत्वपूर्ण रहा है, किन्तु 'दोहावली' भी तुलसीदास के जीवन पर प्रकाष डालनेवाला कल्पतरू रहा है। इस कृति में तुलसी दासजी के आरंभिक जीवन के अपार कष्टों और संघर्षों की सूचना मिलती है, जिसमें टुकड़े–टुकड़े का मोहताज होकर भीख मांगना भी सम्मिलित है–

घर–घर माँगे टूक, पुनि भूपति पूजे पाँय।
जे तुलसी तब राम बिनु, तें अब रामसहाय।।

तुलसीदास ने अपने इस कृति कलियुक के अनुमान में समाज और व्यक्ति की निरंकूषता, लोभ–मोह, स्वार्थ, अतृप्रति, आक्रोष आदि ऐसे अनेक मनोवृति और प्रवृति का संकेत दिया है जिससे समाज में बर्बता, एक दुसरे से आगे बढ़ने की होड़, अपने स्वार्थ सिद्ध में दुसरो का अहित करने से व्यक्ति तनिक भी देर नहीं करेगा। अपने जीवन संघर्ष के कारण दूसरे पर आक्रोषित होगा।
तुलसी कहते हैं कि कलियुग के सभी धर्म दंभ–युक्त, व्यवहार कपट से युक्त तथा प्रेम स्वार्थ युक्त है। इसमें धर्म, निष्कपट व्यवहार तथा निस्वार्थ प्रेम का त्याग कर मनुष्य मनमाना आचरण करते है। परोपकार की तो रती भर विवेक नहीं रखता है। हरेक व्यक्ति अपने मन की करता है। अपने आचरण और व्यवहार से सदैव दुसरों को दुःखी और कुपित करेगा।

असुभ वेष भूषण धरैं भरच्छामच्छ जेखहिं
ते जोगी ते सिद्ध नर, पूजति कलियुग महिं।।

तुलसी कहते हैं कि कलियुग में जो मनुष्य अषुभ वेष धारण करते हैं, अशुभ अलंकार से युक्त हैं तथा खाने योग्य व न खाने योग्य सबकुछ खा जाते हैं, वे ही योगी और सिद्ध होकर सभी के लिए पुज्य हैं–

सकल धरम विपरीत कलि कल्पित कोटि कुपंथ।
पुन्य पराय पहार बन दुरे पुराने सुभग्रंथ।।

तुलसी दास ने 'रामचरितमानस' में कलियुग का वर्णन करते हुए तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का यथातथ्य चित्रण किया है। मुस्लिम शासन में फैली अथवस्था एवं अधर्म का चित्रण करने का कोई अन्य तरीका उस मसय संभव ही न था। तुलसी ने 'मानस' के उत्तरकाण्ड में ही रामराज्य की परिकल्पना करते हुए आदर्श शासन व्यवस्था का प्रारूप भी प्रस्तुत किया है। आदर्श समाज कैसा होना चाहिए तथा राजा और प्रजा के क्या कर्तव्य होते हैं। तत्कालीन परिस्थिति के कारण जन–मन नैतिक मूल्यों को भूल कलियुगी प्रवृती को अपना रहे थे।
कलियुग में नीति–अनीति, पाप–पुण्य, न्याय अन्याय सब कुछ धर्म के अनुकूल हो गया है तथा नए–नए अनेक कुमार्ग कल्पित हो गए हैं। इससे पुण्य तथा पुराणादि ग्रंथ वनों में रहने वाले साधु महात्माओं तक ही सीमित होकर रह गए हैं।

फोरहिं सिल लोढ़ा सदन लागे अढ़ुक पहार।
कायर क्रूर कुपूत कलि घर–घर सहस डहार।।

जिस प्रकार पहाड़ की ठोकर लगने पर मुर्ख लोग घर के सिल–लोढ़े को तोड़ देते है उसी प्रकार कलियुग में घरवालों को तंग करनेवाले कायर, क्रुर और कपूत प्रत्येक घर में होंगे।
एसे अनेक तथ्यों का उद्घाटन कवि ने दोहावली में किया है।

निष्कर्ष

'दोहावली' में तुलसी दास ने जो कलिकाल का वर्णन किया है उसमें तत्कालीन परिस्थितियों परप्रकाष डाला गया है। आज भीये परिस्थितियाँ हमें देखने को मिल रही हैं। दोहावली में तुलसीदास ने इन परिस्थितियों से उबरने का जो उपाय हमारे सामने रखा है, यदि आज हम उसका अनुसरण करें तो निष्चय ही कलिकालीन परिस्थितियों पर हम विजय प्राप्त कर सकते है।

संदर्भ

1. दोहावली पद सं.–560
2. वही पद सं.–561
3. वही पद सं.–109
4. वही पद सं.–550
5. वही पद सं.–556
6. वही पद सं.–567